“बाणभट्ट का चरित्र-चित्रण”

बाणभट्ट की आत्मकथा उपन्यास के संदर्भ में)

बाणभट्ट का चरित्र

बाणभट्ट की आत्मकथा का केन्द्रीय चरित्र 'बाणभट्ट' ही है। वह सम्पूर्ण उपन्यास का केन्द्रबिन्दु है, प्रधान पात्र है तथा उपन्यास के नायक पद का अधिकारी है। बाण का वास्तविक नाम 'दक्ष' था तथा वह प्रसिद्ध पण्डित वात्स्यायन वंशी जयन्त भट्ट का पौत्र था। अल्पायु में ही वह मातृसुख से वंचित हो गया और चौदह वर्ष की अवस्था में पितृस्नेह से भी वंचित हो गया। बचपन से ही बाण आवारा, घुमक्कड़, अस्थिरचित्त था। नगर-नगर, जनपद-जनपद में मारा-मारा फिरता था इसीलिए उसे 'बण्ड' कहते थे। वह एक स्थान पर कभी टिक नहीं सका। यही नहीं उसने कभी नाट्य अभिनय को अपनी जीविका बनाया, तो कभी कठपुतलियों के खेल को, कभी पुराण वाचन से कुछ उपार्जित किया तो कभी नट कर्म से लोगों का मनोरंजन किया।

बाणभट्ट अस्थिर चित्त व्यक्ति था, अतः किसी कार्य की योजना पहले से नहीं बनाता था। वस्तुतः किसी बंधन में बंधना उसे कभी अच्छा नहीं लगा किन्तु जब भी कोई साहस का काम उसे करना होता, वह पूरी योग्यता एवं दायित्व से उस कार्य को पूर्ण करता। भट्टिनी की मुक्ति एवं रक्षा के दायित्व का निर्वहन वह बड़ी कुशलता से करता है।

बाण कवि हृदय होने से सौंदर्योपासक था। उसका सौन्दर्य बोध अत्यन्त गम्भीर एवं गहन था। निपुणिका की आंखें और अंगुलियां उसे बहुत आकर्षक लगती थीं। वह इस विषय में अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त करता है, **"निपुणिका बहुत अधिक सुंदर नहीं थी। उसका रंग अवश्य शेफालिका के कुसुमनाल के रंग से मिलता था परन्तु उसकी सबसे बड़ी चारुता सम्पत्ति उसकी आंखें और अंगुलियां ही थीं। अंगुलियों को मैं बहुत महत्वपूर्ण सौंदर्योपादान समझता हूं। नटी की प्रणामांजलि और पताक मुद्राओं को सफल बनाने में पतली छरहरी अंगुलियां अद्‌भुत प्रभाव डालती हैं।"**

बाणभट्ट स्त्री जाति के प्रति सम्मान का भाव रखता है। वह नारी सौंदर्य का प्रशंसक तो है किन्तु उसकी दृष्टि में कलुष रंचमात्र नहीं है। भट्टिनी के सौंदर्य से अभिभूत बाणभट्ट को उस सौंदर्य में परमात्मा के सौंदर्य की झलक दिखाई देती है, **"भट्टिनी के चारों ओर एक अनुभाव राशि लहरा रही थी। मैं थोड़ी देर तक उस शोभा को देखता रहा। मन ही मन मैंने सोचा कि कैसा आश्चर्य है, विधाता का कैसा रूप विधान है।"**

सौंदर्य प्रेमी बाण नारी की पवित्रता, गरिमा को विशेष महत्व देता है। नारी शरीर को देव मंदिर की भांति पवित्र समझने वाला बाण इस विषय में अपने विचार व्यक्त करता हुआ कहता है, **"मैं नारी सौन्दर्य को संसार की सबसे अधिक**

प्रभावोत्पादिनी शक्ति मानता रहा हूं।.....नारी सौंदर्य पूज्य है, वह देव प्रतिमा है।''

निपुणिका और भट्टिनी दोनों ही बाण से प्रेम करती हैं। निपुणिका की दृष्टि में तो बाण देवतुल्य है। वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हुई बाण से कहती है, **''देखो भट्ट, तुम नहीं जानते कि तुमने मेरे इस पाप पंकिल शरीर में कैसा प्रफुल्ल शतदल खिला रखा है। तुम मेरे देवता हो, मैं तुम्हारा नाम जपने वाली अधम नारी हूं।''**

बाणभट्ट अनेक विधाओं एवं कलाओं में पारंगत तो है ही, साथ ही वह सहृदय, उदार, धैर्यवान, कष्टसहिष्णु एवं अत्यन्त मेधावी भी है। निराहार रहने की साधना में वह सिद्ध है। वह वीर, साहसी एवं प्रणंपालक भी है। न तो वह मिथ्याचारी है और न ही अनर्गल वार्तालाप करता है। उसका विनोदी स्वभाव, स्वाभिमानी वृत्ति उसे चरित्र की ऊंचाइयों पर अवस्थित करती हैं। निश्चय ही बाण के चरित्र के विषय में जो प्रवाद संस्कृत साहित्य में परम्परा से व्याप्त रहा है, उसका खंडन कर बाण को एक सच्चरित्र एवं उदार मानव के रूप में प्रतिष्ठित करने में द्विवेदी जी को सफलता मिली है।

बाण की प्रशंसा निपुणिका एवं भट्टिनी दोनों करती हैं। निपुणिका से तो बाण मित्रवत व्यवहार करता है किन्तु भट्टिनी के प्रति वह भक्तिभाव रखता है। उन दोनों के प्रति बाण के मन में जो भावगत अन्तर है उसे स्पष्ट करते हुए वह कहता है, **''निपुणिका से मैं खुलकर बातें कर सकता हूं, भट्टिनी के सामने मुझमें एक प्रकार की मोहनकारी जड़िमा आ जाती है।''** वह भट्टिनी के रूप पर मुग्ध होकर उसे बस देखता ही रह जाता है। किन्तु उसकी दृष्टि में वासना का कलुष रंचमात्र भी नहीं है। बाण निपुणिका के सेवाभाव से प्रभावित है। भट्टिनी को पहली बार जब बाण ने देखा तो उसकी अतुलित रूपराशि को देखकर उसके मुख से ये शब्द निकल पड़े, **''इतनी पवित्र रूप राशि किस प्रकार इस कलुष धरित्री में सम्भव हुई।''** भट्टिनी बाणभट्ट को अपना अभिभावक मानती है और उसका बहुत सम्मान करती है।

'बाणभट्ट' के चरित्र में साहस, विवेकशीलता, भावुकता, संघर्षशीलता, परदुःखकातरता, पौरुष और प्रत्युत्पन्नमति जैसे गुण विद्यमान हैं। स्वभाव से भावुक बाणभट्ट निपुणिका के नाटक मण्डली छोड़ने पर इतना दुखी होता है कि नाटक मण्डली ही तोड़ देता है। वह स्वाभिमानी एवं साहसी व्यक्ति है। कुमार कृष्णवर्द्धन जब भट्टिनी के सम्बन्ध में बात करते हुए कहते हैं: **''मेरे एक इशारे पर तुम्हारी रक्षणीया देवपुत्री कन्या और तुम्हारा क्या हाल हो सकता है, तुम जानते हो।''** तो वह निर्जीव स्वर में कहता है—**''जानता हूं, परन्तु कुमार को शायद बाणभट्ट का पूरा परिचय नहीं मालूम। उस इशारे के होने से पूर्व इशारे वाली**

आंखें नहीं रहेंगी।'' उसका यह कथन उसकी निर्भीकता का प्रमाण है।

उपन्यास की अनेक घटनाएं उसकी विवेकशीलता एवं प्रत्युत्पन्नमति की परिचायक हैं। लम्पट पुजारी को धनदत्त की ओर मोड़ देना तथा कुमार से लड़कर भी उनसे अपना सम्मान करा लेना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

कवि हृदय बाण भट्टिनी की रक्षा का दायित्व निपुणिका के आग्रह पर लेता है और प्राणपण से उस दायित्व को पूरा भी करता है। भट्टिनी भी उसकी कवित्व शक्ति से प्रभावित थी। बाणभट्ट को ईश्वर पर पूरा विश्वास था और अपनी आस्तिक बुद्धि के बल पर ही वह बिखरे सूत्रों को जोड़कर साहस एकत्र करता है। गंगा में नौका पर आक्रमण के समय इस आस्तिकता ने ही उसे साहस का सम्बल प्रदान किया था।

समग्रतः यह कहा जा सकता है कि 'बाणभट्ट की आत्मकथा'' में बाणभट्ट ही लेखक का प्रिय पात्र रहा है। उसकी पूरी सहानुभूति भी बाण को ही मिली है। बाण के चरित्र के विविध पक्षों को उजागर करने वाली घटनाओं को उपन्यासकार ने इसमें स्थान दिया है। उसकी उदात्त प्रवृत्तियां निश्चय ही पाठकों को प्रभावित करती हैं। नारी के प्रति उसकी दृष्टि निश्चय ही प्रशंसनीय है। निपुणिका तो यह स्वीकार भी करती है कि भट्ट के सम्पर्क में आने से ही वह अपने को हाड़-मांस की गठरी से कुछ अधिक समझने लगी। निश्चय ही बाणभट्ट के चरित्र को उदात्त मूल्यों से सम्पृक्त कर द्विवेदी जी ने उसके परम्परागत लांछित चरित्र को नए आयाम देकर उसका पवित्र प्राक्षालन कर दिया है।